यीशु का संदेश और कंगालों के लिए सुसमाचार: एक प्रारंभिक परिचय

1. परिचय: यीशु की सेवकाई का मुख्य केंद्र

यीशु मसीह की पूरी सेवकाई का मुख्य ध्येय लोगों की व्यावहारिक और आत्मिक ज़रूरतों को पूरा करना था। जब यीशु ने अपने चेलों को अपनी ओर से सेवा करने के लिए भेजा, तो उन्होंने उन्हें भी यही निर्देश दिया कि वे लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने पर ध्यान दें।

यीशु ने अपनी सेवकाई का केंद्र उन लोगों को बनाया जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गरीब या अभावग्रस्त थे। दिए गए विवरण के अनुसार, मानव आवश्यकता और कंगाली के पाँच मुख्य आयाम हैं:

- **आत्मिक रूप से गरीब:** जो अपनी आत्मिक कंगाली को पहचानते हैं और जिन्हें परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है।
- **स्वास्थ्य के लिहाज़ से गरीब:** जो शारीरिक बीमारियों, अंधापन, कोढ़ या अन्य शारीरिक दुर्बलताओं से पीड़ित हैं।
- **शक्ति के लिहाज़ से गरीब:** जिनमें स्वयं का कोई बल या सामर्थ्य नहीं है और जिन्हें सहायता की आवश्यकता है।
- **सामाजिक दर्जे में गरीब:** जो समाज में दबाए गए, कुचले गए या उपेक्षित हैं।
- **आर्थिक रूप से गरीब:** जिनके पास भौतिक धन और जीविका के साधनों की कमी है।

यीशु के कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण **मत्ती 11:5** और **लूका 7:22** में मिलता है:

"अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं; मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।"

2. धनवान बनाम कंगाल: सुसमाचार के प्रति भिन्न प्रतिक्रियाएँ

सुसमाचार का संदेश हर किसी के लिए है, परंतु धनवान और गरीब व्यक्ति के हृदय की स्थिति इस संदेश के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को भिन्न बना देती है।

अमीर लोग अक्सर इस धोखे में आ जाते हैं कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है, जिससे उनके हृदय बंद हो जाते हैं (**मत्ती 19:23-24**)। इसके विपरीत, गरीब लोग अपनी सीमाओं को समझते हैं और सहायता पाने के लिए अधिक तत्पर रहते हैं। इसी कारण परमेश्वर ने इस संसार के कंगालों को चुना है और उन्हें सुसमाचार पर विश्वास करने के लिए अधिक विश्वास देकर उनकी गरीबी की भरपाई की है, ताकि वे विश्वास में धनी और राज्य के अधिकारी बनें (**याकूब 2:5**)।

"तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है... परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।" — **मत्ती 19:23-24**

"हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?" — **याकूब 2:5**

तुलनात्मक तालिका: सुसमाचार के प्रति मानसिकता और प्रतिक्रिया

स्थिति और मानसिकता	सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया
धनवान: आत्मनिर्भरता का भ्रम; सोचते हैं कि उन्हें परमेश्वर या किसी मदद की ज़रूरत नहीं है।	हृदय बंद रहता है; सुसमाचार के संदेश को अस्वीकार कर देते हैं; स्वर्ग के राज्य में प्रवेश अत्यंत कठिन हो जाता है।
कंगाल / गरीब: अपनी ज़रूरतों और सीमाओं का ज्ञान; जानते हैं कि वे स्वयं अपने दम पर सब कुछ नहीं कर सकते।	सुसमाचार के संदेश और समाधानों को ग्रहण करने के लिए तत्पर रहते हैं; परमेश्वर उन्हें अधिक विश्वास देकर उनकी गरीबी की भरपाई करता है।

3. "मन के दीन" होने का अर्थ और आशीष

नये बाइबल शिक्षार्थियों के लिए यह समझना आवश्यक है कि यीशु ने अपनी प्रसिद्ध पहाड़ी शिक्षा (पर्वत पर उपदेश) की शुरुआत ही आत्मा में दीन लोगों पर आशीषों की घोषणा करके की थी:

"धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" — **मत्ती 5:3**

"मन के दीन" होने का अर्थ: यद्यपि कुछ लोग आर्थिक रूप से गरीब हैं और कुछ लोग स्वास्थ्य के मामले में गरीब हैं, परंतु जो लोग **आत्मा में गरीब** (मन के दीन) हैं—अर्थात् जो परमेश्वर के सामने अपनी आत्मिक कंगाली और उसकी दया की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं—वे सबसे अधिक धन्य हैं।

ऐसे लोग सुसमाचार के संदेश को नम्रता से सुनते और ग्रहण करते हैं। वे ही लोग होंगे जिन्हें सुसमाचार के संदेश पर विश्वास करने के आशीषों, समाधानों और पुरस्कारों से सबसे अधिक लाभ होगा।

4. पूर्ण जीवन परिवर्तन: सुसमाचार द्वारा ज़रूरतों की पूर्ति

यीशु मसीह का सुसमाचार केवल एक धार्मिक संदेश नहीं है; इसमें मानव जीवन को पूरी तरह से बदलने की सामर्थ्य है। **लूका 4:18-19** के अनुसार, यीशु का अभिषिक्त मिशन था:

"प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बंदियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ और कुचले हुए लोगों को छुड़ाऊँ, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ।" — **लूका 4:18-19**

इसके अलावा, **2 पतरस 1:3–4** यह दर्शाता है कि परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ्य ने हमें वह सब कुछ दिया है जो जीवन और भक्ति से संबंध रखता है। उसकी बहुमूल्य और बड़ी प्रतिज्ञाओं के माध्यम से हम संसार की सड़ाहट से छूटकर ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी बन जाते हैं।

सुसमाचार द्वारा पूर्ण परिवर्तन:

सुसमाचार मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा करता है:

1. **शरीर:** शारीरिक बीमारियों से चंगाई, अंधों को दृष्टि, और जीवन की भौतिक आवश्यकताओं का प्रबंध।
2. **आत्मा:** उद्धार का मार्ग, ईश्वरीय स्वभाव की सहभागिता (2 पतरस 1:4), और आत्मिक कंगाली की पूर्ति।
3. **मन:** मानसिक बंधनों और कुचलेपन से मुक्ति, तथा परमेश्वर के राज्य के अनंत व बहुमूल्य वचनों से शांति पाना।